स्वर्ग और परमेश्वर का लोक इनके बीच क्या अंतर है? क्या वे समान हैं?

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

स्वर्ग आपके अच्छे और परोपकारी कार्यों के लिए या पुण्य कर्मों के लिए एक पुरस्कार है। चाहे पुण्य कर्म हो या पाप कर्म हो, हर मायिक कर्म का फल सीमित होता है। इसीलिये स्वर्ग परीमित दायरे में आता है।

स्वर्ग में आपको विभिन्न प्रकार के कामुक सुख प्राप्त होंगे। हालांकि, अंत में, अपने इनाम का उपभोग करने पर, आप को इस दुनिया में वापस फेक दिया जाता हैं; वो भी कुत्ते, बिल्ली, गधे आदि योनी में जाना पडता है। यह कोई स्थायी समाधान नहीं है।

हिंदू स्वर्ग की अत्यंत निर्भत्सना करता है। कृष्ण कहते है जो लोग स्वर्ग के लिए प्रयास करते हैं वे महामूर्ख है।

ईश्वर का लोक अनंत क्षेत्र में है। एक बार मिलने पर हमेशा के लिए मिल जाता है।

इस्लाम जन्नत (स्वर्ग) और ईश्वर के लोक के बीच स्पष्ट भेद नही देता।

एक और तर्क जो इस्लाम से नहीं आ रहा है, वह ये कि इस दुनिया की आवश्यकता क्या थी? परमेश्वर ने कैसे अपने बच्चों को इस तरह की दयनीय अवस्था में रखा?

हिंदू से जवाब आता है - 'भगवान ने कभी इस दुनिया को नहीं बनाया। यह दुनिया अनादि काल से अस्तित्व में

है। ये कोई नई रचना नहीं है। कोई नई रचना हो ही नहीं सकती। वही दुनिया ईश्वर के अंदर से प्रकट होती है ताकि आत्माएं असीम ईश्वरीय सुख की तलाश करें। एक बार अपनी उपयोगिता खो जाने पर वही दुनिया ईश्वर में वापस लीन हो जाती है। फिर से इस दुनिया को भगवान में विश्वास के उपयुक्त वातावरण के साथ प्रकट किया जाता है। इस प्रकार दुनिया के बनने बिगडने का क्रम अनंत काल तक चलता रहेगा ।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132